हिन्दी

श्री शत्रुंजय - मुक्ति सम्यग्ज्ञान अभ्यासक्रम

C/o. शाह गोविन्दजी वीरम फेक्टरी कम्पाउन्ड, मोंढा रोड, औरंगाबद (महा.) ४३१ ००१

सम्यग्ज्ञान प्रवेशिका

◆◆◆ अभ्यासक्रम जवाब पत्र ◆◆◆

१

ऐनरोलमेन्ट नंबर

शहर

फरवरी - २०१९ 2023

विद्यार्थी का नाम

प्रश्न-१ रिक्त स्थान

(१)	राग
(२)	झुकना
(३)	उत्तर वैक्रिय शरीर
(४)	व्युत्पत्ति
(५)	मनोबल
(६)	मित अवग्रह
(७)	धनदेव
(८)	युगलिक क्षेत्र
(९)	ज्ञान दशा
(१०)	विनय
(११)	मधुबिंदु
(१२)	आत्मा
(१३)	पारिणामिक
(१४)	वृषभ
(१५)	वस्तुपाल
(१६)	शूलपाणी यक्ष मंदिर में
(१७)	यथाख्यात चारित्र
(१८)	सेवक
(१९)	स्वकाय स्थिती
(२०)	आयुष्य प्राण

प्रश्न-२ एक ही शब्द में

(१)	दो से नौ
(२)	अभयकुमार
(३)	सत् पद प्ररूपणा
(४)	मृगावतीजी
(५)	बैल
(६)	चारित्र
(७)	तीन पल्योपम
(८)	पंचेन्द्रिय
(९)	स्वकाय स्थिती
(१०)	क्षायिक
(११)	भवधारणीय
(१२)	वैश्यायन
(१३)	चार अजगर
(१४)	देवलोक में
(१५)	विशेषज्ञता

(५)	जीवों को
(६)	वृद्ध
(७)	मनुष्यों
(८)	विनय
(९)	भगवंत
(१०)	असंख्य
(११)	उर परिसर्प
(१२)	नारकी
(१३)	पृथ्वी
(१४)	उत्कृष्ट
(१५)	अपराध को
(१६)	स्पर्शना
(१७)	संज्ञि
(१८)	बारह वर्ष
(१९)	प्राण
(२०)	अनंत

प्रश्न-३ शब्दार्थ

(१)	आज्ञा दो
(२)	देव
(३)	घोडा
(४)	मत्स्य

प्रश्न-४ जोडियाँ लगाओ

(१)	५	(६)	९
(२)	६	(७)	४
(३)	७	(८)	३
(४)	८	(९)	१
(५)	१०	(१०)	२

प्रश्न-५ संख्या में जवाब

(१)	२५
(२)	६२
(३)	६
(४)	७० को. को. सा.
(५)	४९ दिन
(६)	१ हाथ
(७)	१७
(८)	१०
(९)	७
(१०)	१३३३ हाथ ८ अंगुल

	प्रश्न-६ ✓ या ×		प्रश्न-७ यह वाक्य किस पृष्ठ पर
(१)	✓	(१)	१६
(२)	×	(२)	२०
(३)	×	(३)	२४
(४)	✓	(४)	३
(५)	×	(५)	८
(६)	×	(६)	९
(७)	✓	(७)	१७
(८)	✓	(८)	१०
(९)	×	(९)	१९
(१०)	✓	(१०)	९

प्रिंटिग भूल के कारण अथवा हमसे रह गयी भूल के कारण विद्यार्थीओं को जो तकलीफ होती है, उसके लिये हम क्षमाप्रार्थी है । ऐसे संजोगो में विद्यार्थी को उसका पूरा मार्क दिया जाता है ।

रीमार्क ____________________ जांचनेवाले की सही ____________________

प्रश्न - ८

१. वांदणा सूत्र में पचास बोल बताए हैं। शरीर की पच्चीस पडिलेहणा और मुहपत्ती के ~~हे क्षमाश्रमण ! आपको मैं शक्ति अनुसार पाप सहित~~ पच्चीस पडिलेहणा है। इन पचास बोल में उपादेय तथा हेय का विवेक सुंदर रूप से किया गया है। प्रवचन यह तीर्थ है। उसके अंगरूप सूत्र और अर्थ को तत्व दृष्टि से हृदय में धारण करने के लिए कहा गया है। यानि सूत्र और अर्थ सत्य है ऐसी अचल श्रद्धा रखना। अंत में अनुक्रम से राग, द्वेष के स्वरूप क्रोध, मान, माया और लोभ को त्यागने की भावना कर सामायिक की साधना को सफल बनाने वाली मैत्री भावना का हो सके उतना अमल करने के लिए छः काय जीव की विराधना हुई हो उसका मिथ्या दुष्कृत किया है।

२. विशेषज्ञ पुरूष अपक्षपात पने से वस्तुओं के गुणदोष जान सकते हैं, अतः प्रायः वैसा पुरूष ही उत्तम धर्म के योग्य है। उत्तम धर्म की आराधना करनी है तो विशेषज्ञता का स्वामी बनना पडेगा। आँख, बुद्धि, जीभ के साथ यदि विशेषज्ञता जुड जाय तो आत्मा सरलता से भवसागर तिर जाय। विशेषज्ञ तटस्थ दृष्टिवाला होता है, उसके पास पक्षपाती दृष्टि नहीं होती। जो वस्तु जैसी होती है वैसी ही जान सकते हैं। उसी तरह विशेषज्ञ वस्तु के गुण और दोष दोनों जानने वाला होता है।

३. जीव बारंबार स्वयं की जाति में जितने वक्त तक उत्पन्न हो (जन्म-मरण करें) वह उनकी स्वकाय स्थिति कहलाती है। पृथ्वीकायादि स्थावर जीव, विकलेंद्रिय जीव, तथा तिर्यंच-मनुष्य जीव एक जाति में ममत्व भावना के कारण बारंबार जन्म-मरण करते हैं। पर इस स्वजाति में ही जन्म मरण करने में कुछ नियम हैं। सर्व एकेंद्रिय तथा अनंतकाय जीव अनुक्रम से असंख्य उत्सर्पिणी, अवसर्पिणी तथा अनंत उत्सर्पिणी, अवसर्पिणी तक स्वकाय में ही उत्पन्न होते हैं और च्यवते हैं।

४. मोक्ष तत्त्व की विचारणा नौ द्वारों से होती है।

1) सत्पदप्ररूपणा द्वार : मोक्ष के संबंध में विद्यमान पद की प्ररूपणा प्रतिपादन करना, सत्पद प्ररूपणा द्वार है।

2) ~~द्र~~ द्रव्यप्रमाण द्वार : सिद्ध के जीव द्रव्य कितने हैं? इनके संख्या संबंधी विचारणा करना वह द्रव्य प्रमाण द्वार है।

५. मथुरा में जिनदास नामक सेठ था। साधुदासी नामक उसकी पत्नी थी। वे दोनो श्रावकधर्म का चुस्तता से पालन करते थे। गोपालक ने उनको सुंदर दो बाल बछडे दिए। अष्टमी, चतुर्दशी आदि तिथिपर शेठशेठानी पौषध लेकर धार्मिक पुस्तक पढते। वह सुनकर बैल भी भद्रिक परिणामी होते थे। एक दिन शेठ का मित्र उनको यक्ष की यात्रा में गाडी में जोडकर ले गए। कभी भी गाडी में नहीं जोडे गए ऐसे बैलों को दौड की ~~स~~ शर्त में दौडाया और उनकी सांधे टूट गए। बैलों की ऐसी स्थिति देखकर शेठ बहुत दुखी हुए। फिर अश्रुपूर्ण नयनों से बैलों को पच्चख्खाण कराकर नमस्कार महामंत्र सुनाया और अच्छी तरह से निर्यामणा कराया, शुभ भाव में रहे हुए वे बैल मृत्य पाकर कंबल-संबल नामक देव हुए।